Date	10.04.2023
Authors	Dr. Swati Piramal and Kartik Verma
Domain	Uttam Hindu

Change in the country's healthcare is possible only through warm and compassionate leadership

2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की अपनी बहुआयामी रणनीतियों के हिस्से के रूप में भारत ने स्वास्थ्य और स्वास्थ्य देखभाल दोनों में तेजी से प्रगति की है। हम गेमचेंजर डिजिटल बूम देख रहे हैं, विशेष रूप से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के क्षेत्र में। लगभग 2 साल पहले भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन यह सुनिश्चित करने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहा है कि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा से कोई भी व्यक्ति छूट न जाए। आभा (आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट) स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में क्रांति लाने और संपूर्ण स्वास्थ्य सेवा अनुभव में उल्लेखनीय सुधार करने के लिए तैयार है। हेल्थकेयर डिजिटलीकरण, बुनियादी ढांचे, कवरेज और अन्य इनपुट पर जोर देने से कई हेल्थकेयर संकेतकों में स्पष्ट सुधार देखने को मिल रहे हैं।

कल्याण मायने रखता है

सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के लिए आवश्यक है कि स्वास्थ्य सेवाएं न केवल उपलब्ध, सस्ती और सुलभ हों, बल्कि यह भी कि वे प्रत्येक व्यक्ति को स्वीकार्य, दयालु और सम्मानजनक तरीके से प्रदान की जाएं , यही देखभाल की गुणवत्ता का निर्धारक होगा। ऐसे एक नहीं कई शोध हैं, जिन्होंने यह साबित कर दिया है कि 'स्वास्थ्य देखभाल' केवल बीमारी के उपचार या उपचार को सक्षम करने के लिए बुनियादी ढांचे की उपलब्धता के बारे में नहीं है, यह संपूर्ण मानव के समग्र कल्याण के बारे में भी है। ऐसे कई उदाहरण हैं जो बताते हैं कि कैसे सम्मानजनक स्वास्थ्य सेवा ने रोगी की तेजी से रिकवरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह इस विश्वास को मजबूती देता है कि व्यक्तिगत और सेवा-उन्मुख उद्योग के रूप में स्वास्थ्य देखभाल के रूप में रोगी का अनुभव ही सभी समाधानों के केंद्र में होना चाहिए।

करुणामयी नेतृत्व से बदलती है तस्वीर

हेल्थकेयर एक तनावपूर्ण और उच्च जोखिम वाला उद्योग है जो निरंतर बदलाव के दौर से गुजरता रहता है, यह स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं पर भी भारी बोझ डालता है। करुणापूर्वक स्थिति से आगे बढ़ने और स्थिति को प्रबंधित करने की क्षमता काम आती है। यदि सम्मानजनक स्वास्थ्य सेवा को हमारी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली का अभिन्न अंग बनना है, तो यह समय की मांग है कि प्राथमिकता के आधार पर सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के भीतर दयालु नेतृत्व का निर्माण करना सुनिश्चित किया जाए। परम पावन दलाई लामा ने लगातार इस बात पर जोर दिया है कि करुणा एक ऐसा गुण है जिसकी हमें आज पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। करुणा संपूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रणाली का शांति से धड़कता हुआ हृदय है। कोविड के दौरान, हमने स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में हर वर्ग के लोगों – डॉक्टरों, नर्सों, फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं के करुणा से भरे काम देखे। हालांकि, इस तरह के काम हमेशा सहज-स्फूर्त होने चाहिए न कि विषम परिस्थितियों के वशीभूत होकर। इसके लिए बहुआयामी लीक से हटकर सोचने की जरूरत है।

करुणा पाठ्यक्रम का निर्माण

यदि रोगी और प्रणाली के बीच इंटरफेस के हर बिंदु पर करुणा को आंतरिक बनाना है, तो एक पाठ्यक्रम का निर्माण करना और इसे सम्मानजनक स्वास्थ्य सेवा के लिए जिम्मेदार सभी लोगों तक पहुंचाना अनिवार्य हो जाता है। इसको लेकर बिहार सरकार पहले ही मोर्चा संभाल चुकी है। एमोरी यूनिवर्सिटी (जहां महामहिम दलाई लामा राष्ट्रपति पद के विशिष्ट प्रोफेसर हैं) द्वारा विकसित एक 8-चरण का पाठ्यक्रम रोल आउट किया जा रहा है। यह मानवता की भलाई के लिए दिल और दिमाग दोनों को शिक्षित करने के दलाई लामा के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाता है। अभी तक, बिहार के 20 जिलों में 1200

स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल में करुणामयी नेतृत्व के निर्माण की दिशा में संज्ञानात्मक आधारित करुणा प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण घटकों के माध्यम से प्रभावित किया गया है। यह अस्पताल के सुरक्षा गार्डों से लेकर अस्पताल प्रबंधक, मरीज का इलाज करने वाली नर्स या डॉक्टर तक, हर स्तर पर दयालु लीडर तैयार करता है। प्रत्येक स्वास्थ्य सेवा प्रदाता एक नेता की तरह जटिल स्थितियों को प्रबंधित करने, हल करने और सम्मानजनक देखभाल प्रदान करने की क्षमता के कारण सशक्त महसूस करता है।

पाठ्यक्रम को संस्थागत बनाना और सभी तक पहुंचाना

हालांकि, पाठ्यक्रम अपने आप में दयालु नेतृत्व के निर्माण की दिशा में एक लंबी छलांग है, इसे संस्थागत रूप देने से भी एक बड़ा परिवर्तन आएगा। हर शैक्षणिक संस्थान और अंतिम छोर पर मौजूद हर विभाग, जिसे स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है (चाहे वे मेडिकल/नर्सिंग कॉलेज हों या अन्य स्वास्थ्य कर्मियों की सीखने और क्षमता निर्माण के लिए सरकारी विभाग हों) को करुणा-आधारित पाठ्यक्रम विकसित करना चाहिए और उसे अपनाना चाहिए। अगर अनुकंपा नेतृत्व को स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण होना है, तो राज्य और क्षेत्रीय स्वास्थ्य संस्थानों की क्षमताओं को करुणामयी पाठ्यक्रम देने के लिए बनाया जाना चाहिए। स्थापित अकादमिक और विकास क्षेत्र के संग□नों के साथ साझेदारी मास्टर कोच और मास्टर फैसिलिटेटर के आयोजन को सक्षम कर सकती है, जिससे सार्वजनिक सामान तैयार किया जा सके जो सभी के द्वारा दिया जा सके। राज्य सरकारों को शिक्षा और विकास क्षेत्र के खिलाड़ियों द्वारा समर्थन दिया जा सकता है जो पहले से ही इस तरह के पाठ्यक्रम और समर्थन की पेशकश कर रहे हैं।

भीतर देखें और एक दयालु संस्कृति का निर्माण करें

सिस्टम को आंतरिक रूप से मजबूत करना महत्वपूर्ण है, जहां सम्मान और करुणा लोकाचार के लिए आंतरिक हैं। सभी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को सिस्टम के भीतर वर्कलोड की एक विस्तृत श्रृंखला का सामना करना पड़ता है, जो अक्सर बर्नआउट का कारण बनता है और रोगी के अनुभव पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। सम्मान और करुणा उन सभी सफलता की कहानियों का आधार बन गए हैं जो क□ोर परिस्थितियों से भी उत्पन्न होती हैं। इस प्रकार प्रत्येक राज्य, जिला और ब्लॉक अस्पताल में दयालु चिकित्सकों का एक नेटवर्क बनाना पहले आत्म-करुणा से शुरू करके और दूसरों के लिए करुणा की ओर बढ़ते हुए बदलाव की बयार को गति देना महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्ति संग□नात्मक संस्कृति को महत्व देना और मापना रोगी परिणामों के समान ही महत्वपूर्ण है। संस्कृति और कर्मचारियों की संतुष्टि को मापने के लिए संकेतक विकसित करना, टीम के लिए आत्म-करुणा और करुणा के बीज डालने के लिए अधिक महत्व रखती है। यहएक स्वास्थ्य देखभाल संस्थान का निर्माण करती है जिसकी नींव करुणा है।

भारत – करुणा की मिसाल

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के दिशा-निर्देशों में सम्मानजनक स्वास्थ्य सेवा का उल्लेख है, एनएचएम द्वारा जारी लक्ष्य दिशा-निर्देशों में सम्मानजनक मातृ देखभाल पर जोर दिया गया है। इस तरह के दिशानिर्देशों को करुणा, सेवा, सम्मान और सुरक्षित गुणवत्ता देखभाल के सिद्धांतों के आधार पर अनुभवों को बेहतर बनाने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा विकसित हर नीति और हर दिशानिर्देश का ताना-बाना होना चाहिए। भारत ऐतिहासिक रूप से करुणा के अपने मूल्यों के लिए जाना जाने वाला देश है। यह दयालु नेतृत्व ही है जो वास्तव में लोगों की पीड़ा महसूस कर सकता है और चिकित्सा के जनक हिप्पोक्रेट्स के शब्दों को जीवंत कर सकता है, 'जहां चिकित्सा स्नेह देने की कला बन जाती है, वहां मानवता से प्रेम झलकने लगता है।'